RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-12
December -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

भारत–चीन संबंध (2017 तक)

डॉ.ब्रजेश कुमार

पी–एच.डी., वि.वि.राजनीति विज्ञान विभाग, ति.मॉ.भा.वि.वि., भागलपुर

क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की दृष्टि से भारत और चीन एशिया के दो प्रमुख विकासशील देश हैं। भारत–चीन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंध चाहे एक लम्बी रात के अँधेरे में निर्जीव एवं सुषुप्त से पड़े रहे, लेकिन सन् 1954 में भारत और चीन ने शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए पंचशील सिद्धांत संबंधी समझौते पर हस्ताक्षर कर सौहार्दपूर्ण संबंधी समझौते पर हस्ताक्षर कर सौहार्दपूर्ण संबंधों की दिशा में में शुरूआत की। लेकिन सीमा को लेकर शुरू हुए विवाद ने 20 अक्टूबर, 1962 को दोनों देशों के बीच युद्ध प्रारंभ हो गया चीन ने भारत के विस्तृत भूभाग पर अपना अधिकार कर लिया। 21 नवम्बर, 1962 को युद्ध विराम के पश्चात् चीन की सेनाएं कुछ इलाकों में युद्ध से पहले वाली स्थिति अर्थात् दोनों देशों को विभाजित करने वाले मैकमोहन लाइन के पीछे चली गई, लेकिन फिर भी भारत का 96 हजार वर्ग किलोमीटर इलाका चीन के कब्जे में। इस युद्ध ने वर्षों पुराने सम्बन्धों को मित्रता के स्थान पर शत्रुता में परिवर्तित कर दिया और कल के मित्र परस्पर दुश्मन हो गए। वर्तमान में भी यह सीमा विवाद दोनों देशों के रिश्तों में सुधार की सबसे बड़ी बाधा है।[1]

ज्ञात हो कि समय और परिस्थितियाँ प्रत्येक समस्या का उपचार करने का सुहावना अवसर उपलब्ध करवाती है। इसी के अनुरूप समय एवं परिस्थितियों ने दोनों देशों को पुनः निकट लाकर शत्रुता का उपचार किया तथा हिन्दी–चीनी भाई–भाई की भावना को पुनर्जीवित किया। इस दिशा में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की 18 से 22 दिसम्बर, 1988 की पाँच दिवसीय चीन यात्रा ने सीमा विवाद के शांतिपूर्ण समाधान का रास्ता प्रशस्त किया, बेहतर संबंधों की तलाश के नजरिए से राजीव गांधी की यह यात्रा मैत्री के उस बंध को पुख्ता बनाने की ओर एक ऐतिहासिक कदम के रूप में मानी गई जो 1962 में भारत उत्तरी सीमा पर चीन के आक्रमण से ध्वस्त हो गया था।[2]

दोनों देशों के संबंधों में सुधार के लिए विभिन्न स्तरों पर वार्ताओं का सिलसिला गति पकड़ता गया और महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने एक–दूसरे के देश में आना–जाना प्रारंभ किया। 11 से 16 दिसम्बर, 1991 की चीनी प्रधानमंत्री ली फंग की भारत यात्रा, मई 1992 में भारत के पूर्ण राष्ट्रपति वेंकटरमन की चीन यात्रा, 1993 में तत्कालीन वाणिज्य राज्यय मंत्री प्रो.पी.के. कुरियन के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधि मंडल की चीन यात्रा; पूर्व उपराष्ट्रपति के.आर.नारायण की 21 से 27 अक्टूबर, 1994 की सात दिवसीय चीन यात्रा[3]; नवम्बर 1996 में चीन के पूर्व राष्ट्रपति जियांग जेमिन की भारत याात्रा; मई 2000 में पूर्व राष्ट्रपति के.आर.नारायणन की चीन यात्रा; जनवरी 2001 में चीन के पूर्व प्रधानमंत्री नेशनल पीपुल्स कांग्रेस के अध्यक्ष ली लंग की भारत यात्रा; चीन के तात्कालीन प्रधानमंत्री जू रोंगजी की 13 जनवरी, 2002 से भारत की 6 दिवसीय यात्रा; भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा; 2005 में चीन के प्रधानमंत्री बेन जियाबाओं की भारत यात्रा; जून 2006 में तत्कालीन भारतीय रक्षामंत्री प्रणव मुखर्जी की चीन यात्रा तथा 20 नवम्बर, 2006 से चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओं की चार दिवसीय भारत यात्रा दोनों देशों के रिश्तों में नए दौर की साक्षी है। इन्हीं के फलस्वरूप वर्ष 2006 को भारत–चीन मैत्री पर्यटन वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।[4]

व्यापारिक संबंध

आज दुनिया भर की निगाहें एशिया की दो आर्थिक शाक्तियों भारत और चीन के मध्य बढ़ते हुए नए आर्थिक रिश्तों पर टिकी हुई हैं, चीन की अर्थव्यवस्था दुनिया की तेज गति से बढ़ रही अर्थव्यवस्था है और भारतीय अर्थव्यवस्था के पहिए भी बहुत तेजी से घूम रहे हैं। दोनों देशों के रिश्तों का अहम् एवं सबसे सकारात्मक बिन्दु दोनों देशों की बीच तेजी से बढ़ रहा व्यापार है। यह बढ़ता हुआ व्यापार ही दोनों देशों के संबंधों में सुधार की ताकत बन गया है। नाथु ला दर्रे को व्यापार के लिए खोलना दोनों देशों के बीच आर्थिक एवं राजनीतिक संबंधों से सुधार की ओर एक सराहनीय प्रयास है।[5]

स्पष्ट है कि उदारीकरण एवं आर्थिक सुधारों से भारत–चीन व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2002–03 में भारत–चीन व्यापार लगभग मात्र 5 अरब डॉलर ही था जो वर्ष 2005–06 से बढ़कर लगभग 20 अरब डॉलर तक पहुँच गया है। 6 जुलाई, 2006 से भारत–चीन संबंधों का एक नया रास्ता खुल गया। दोनों देशों के बीच बंद हुए नाथु ला दर्रे के व्यापार मार्ग को 44 वर्षों बाद फिर से खोल दिया गया, तत्कालीन भारतीय रक्षा मंत्री प्रणव मुखर्जी ने चीन यात्रा दौरान इस मार्ग को खोले जाने के समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।[6]

भारत–चीन व्यापार को सन् 2010 तक 40 अरब डॉलर तक पहुँचाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह दोनों देशों के मध्य पढ़ते आर्थिक संबंधों का द्योतक है।[7]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भारत द्वारा चीन को निर्यात किए जाने वाले माल में मुख्यतः शामिल हैः हिरा जवाहरात, लोह एवं इस्पात, मशीनी औजार, विभिन्न प्रकार की कच्ची धातु और अयस्क, फ्रोजन सी फूड्स, प्लास्टिक और उससे बने अन्य उत्पाद, कार्बनिक एवं अकार्बनिक रसायन, ऊनी धागा, कपड़े और उनके बने अन्य उत्पाद आदि।[8]

भारत द्वारा चीन से आयात किए जाने वाले माल में मुख्यतः शामिल है : रेशम, कार्बनिक रसायन, खनिज ईंधन और उसके उत्पाद, इलेक्ट्रिक उपकरण और मशीनरी, नाभिकीय रिएक्टर आदि।[9]

विशेषज्ञों का मानना है कि निम्न क्षेत्रों में भारत–चीन व्यापार को बढ़ाया जा सकता है : ऑटोमोबाइल, औषधियाँ, इलेक्ट्रोनिक पुर्जे आदि।

भारतीय उद्योग परिसंघ ने भारत–चीन व्यापार में वृद्धि क लिए निम्न उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किए हैं :

1. बेहतर मूलभूत ढाँचा तैयार कर भारत में व्यापार प्रबंधन की लागत को कम करना।
2. व्यापारिक जहाज और एयर कार्गों की संख्या में वृद्धि करना।
3. चीन में भारतीय उत्पादों की ख्यांति/साख बढ़ाने के लिए भारतीय व्यापार मेले का आयोजन करना।
4. दोनों देशों के बीच बेहतर बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराना।
5. भारत–चीन एक्जिम बैंक द्वारा एक द्विपक्षीय साख–पत्र जारी कराने पर ध्यान देना।
6. चीन को कच्चा माल और माध्यम दर्जे के उत्पाद बेचने के स्थान पर उच्च गुणवत्ता वाले पदार्थों के निर्यात को बढ़ावा देना।

संबंधों का नया दौर

भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरूणाचल प्रदेश पर दावा जताने वाले चीनी राजदूत युक्सी के बयान की छाया के बीच चीनी राष्ट्रपति हू जिन्ताओ की 20 नवम्बर, 2006 से चार दिवसीय भारत–यात्रा रिश्तों के नए दौर की शुरूआत मानी जा सकती है। भारतीय प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह के साथ 21 नवम्बर 2006 को हैदराबाद हाउस में हुई बैठक के बाद चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओं ने आपसी सम्बन्धों को और अधिक मजबूत बनाने के लिए भारत–चीन सीमा विवाद के शीघ्र समाधान की आशा जताई वहीं भारतीय प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह भी सीमा विवाद को केन्द्रीय महत्व का मुद्दा बताते हुए दोनों देशों से इसका युक्तिसंगत और मान्य तरीके से समाधान निकालने की अपील की वार्ता के बाद दोनों पक्ष सभी क्षेत्रों सहयोग बढ़ाने और आपसी सामरिक साक्षेदारी को आधिक मजबूती देने सम्बन्धी एक दस–सूत्रीय रणनीति पर सहमत हुए तथा दोनों देशों के मध्य 13 समझौतों पर हस्ताक्षर हुए साथ ही यह भी सहमति बनी कि कोलकाता में चीन सीमा विवाद पर दोनों देशों के विशेष प्रतिनिधियों के बीच चलने वाली वार्ता को और करके एवं चुस्त–दुरूस्त बनाकर सभी सीमा संबंधी मामलों का हल जल्दी–से–जल्दी निकालने की कोशिश की जाएगी तथा सीमा विवाद का हल दोनों देशों के बीच अप्रैल 2005 में हुए समझौते के तहत निहित राजनीतिक मानक एवं सिद्धांत निर्देशिका के आधार पर निकाला जाएगा।[10]

घोषणा–पत्र के मुख्य बिन्दु

भारतीय प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह और चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओ द्वारा 21 नवम्बर, 2006 को हुई बैठक के पश्चात् की गई संयुक्त घोषणा के प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है– दोनों पक्षों ने आपसी सम्बन्धों की मजबूती के लिए दस–सूत्रीय रणनीति पर प्रतिबद्धता प्रकट की है–

1. द्विपक्षीय संबंधों का व्यापक विकास सुनिश्चित करना
2. संस्थागत सम्पर्क और विचारविमर्शतंत्र को मजबूत करना।
3. व्यावसायिक और आर्थिक आदान प्रदानों को मजबूत बनाना
4. पारस्परिक लाभदायी सहयोग का चहुँमुखी विकास करना।
5. रक्षा सहयोग के जरिए पारस्परिक विश्वास को बढ़ावा देना।
6. सीमा सहित प्रमुख मुद्दों को शीध्र सुलझाना
7. सीमा पारीय सम्पर्क और सहयोग को प्रोत्साहन देना।
8. विज्ञान एवं तकनीक में सहयोग को बढ़ावा देना।
9. सांस्कृतिक सम्बन्धों और लोगों के बीच आदन–प्रदान को बढ़ावा देना।
10. क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर सहयोग बढ़ाना।

मोदी सरकार में भारत–चीन संबंध :–

नरेन्द्र मोदी जब 2014 में भारत के प्रधानमंत्री बने तो पूरा देश उनसे भारत के लिए कई संभावनाएं देख रहा था। चीन और पाकिस्तान के साथ भारत के संबंध को लेकर भी देश के लोगों को काफी उम्मीद थी। नरेन्द्र मोदी ने शुरूआत में अपने की दिशा में काफी प्रयास भी किए। इसी कड़ी में सितम्बर 2014 को चीन के राष्ट्रपति मोदी के निमंत्रण पर अहमदाबाद पहुंचे। जिस तरह से मोदी ने उनका स्वागत किया, उससे लगा कि दोनों देशों के बीच सम्बन्ध सुधारेगा। इस यात्रा के दौरान कैलाश मानसरोवर यात्रा के नगए मार्ग और रेलवे में सहयोग समेत 12 समझौतों पर हस्क्षार किए गए। इसके अलावा दोनों देशों के क्षेत्रीय मुद्दों और चीन के औद्योगिक पार्क से संबंधित समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। हालांकि इसी दौरान चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के करीब एक हजार जवान पहाड़ी से जम्मू कश्मीर के चुमार क्षेत्र में घुस आए थे। भारत ने चीनी राष्ट्रपति के सामने यह मुद्दा

उठाया लेकिन अपनी तरफ से वार्ता में कोई खलल नहीं पड़ने दिया।[11]

18 जून 2017 को डोकलाम पर सीमा विवाद को लेकर एक बार फिर से दोनों देशों के बीच तनाव हुआ और यह लगभग 73 दिनों तक चला। ध्यातव्य है कि भारत–भूटान और चीन को मिलाने वाला बिन्दु को भारत में डोकलाम, भूटान में 'डोक ला' और चीन में 'डोकलांक' कहा जाता है। डोकलाम एक पठार है जो भूटान के हा घाटी, भारत के पूर्व सिक्किम जिला और चीन के यदोंग काउंटी के बीच में है। डोकलाम का कुछ हिस्सा सिक्किम में भारतीय सीमा से सटी हुई है, जहां चीन सड़क बनाना चाहता है। भारतीय सेना ने सड़क बनाना चाहता है। भारतीय सेना से सड़क बनाए जाने का विरोध किया। भारत की चिन्ता यह है कि अगर यह सड़क बनी तो हमारे देश के उत्तर पूर्वी राज्यों को देश से जोड़ने वाली 20 किमी चौड़ी कड़ी यानी 'मुर्गी की गरदन' जैसे इस इलाके पर चीन की पहुंच बढ़ जाएगी। वहीं चीन ने अपनी सम्प्रभुता की बात दोहराते हुए कहा कि उन्होंने सड़क अपने इलाके में बनाई है। इसके साथ ही उन्होंने भारत भारतीय सेना पर अतिक्रमण का आरोप लगाया। चीन का कहना था कि भारत 1962 में हुई हार को याद रखे। चीन ने भारत को चेतावनी भी दी कि चीन पहले भी अधिक शक्तिशाली था और अब भी है। जिसके बाद भारत ने कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि चीन समझे की अब समय बद गया है, यह 2017 है। इस विवाद का असर यह हुआ कि चीन ने भारत से कैलाश के लिए जाने वाले हिन्दू तीर्थयात्रियों को मानसरोवर यात्रा पर जाने से रोक दिया। हालांकि बाद में चीन ने हिमाचल प्रदेश के रास्ते 56 हिन्दू तीर्थयात्रियों को मानसरोवर यात्रा के लिए आगे जाने की अनुमति दे दी। डोकलाम पर भारत–चीन के बीच लगभग दो महीने तक काफी तनातनी होने के बाद अन्ततः विवाद समाप्त हुआ।[12]

उम्मीद है कि भारत एवं चीन आने वाले समय घोषणा–पत्र के बिन्दुओं के अनुसार कार्य कर परस्पर सम्बन्धों को और मजबूती प्रदान करेंगे। भारत–चीन रिश्तों के संबंध में इस समय तो यही कहा जा सकता है कि बहुत छिपी है कड़वाहट, किन्तु मिठास घुल जाए तो कोई आश्चर्य नहीं होगा, चीन से मिठास पाने के लिए भारतीय नेताओं को अपनी कूटनीतिक क्षमताओं का नेताओं को अपनी कूटनीतिक क्षमताओं का परिचय देते हुए सतर्कता के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

संदर्भ सूची :–

1. दीक्षित, जे.एन.; भारतीय विदेश नीति, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली , पृ. 87
2. वही, पृ. 185
3. मिश्रा, केशव एवं अन्य; 20वीं सदी में भारत चीन संबंध, GenNext Publications, New Delhi, 2016,पृ. 20–25
4. वही, पृ. 156
5. शौरी, अरूण; भारत–चीन संबंध, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ.17–18
6. वही, पृ. 152
7. गुप्त, मानिक लाल; भारत–चीन कूटनीतिक संबंध, एटलान्टिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. 35
8. वही, पृ. 69
9. खन्ना, वी.एन.; अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. 56
10. वही, पृ. 95
11. वही, पृ. 110
12. वही, पृ. 154

RRIJM 2015, All Rights Reserved